यगावतार

कार क एक्सीलटर पर पाव रखत ही मयक भल जाता था कि वा जमीन पर ह। उसक ख्याल आसमानी रग भरन लगत थ। वा उन रगा म खा जाता था। यही सब ता चाहा था उसन। अपन पास एक बढिया कार हा आर पाव क नीच अमरिका की जमीन हा। हाई व पर स्पीडिग मना थी पर वा कई बार बपरवाह हा जाता था। वा भविश्य क सपन नही बनताथा वा ता अतीत म गात मारन लगताथा। स्वय का गर्वित सिहासन पर बठाकर स्वय ही पशसक बन जाताथा। माटी स उठकर स्वय क बलबत पर महल र्निमित कियाथा उसन।

दिल्ली क पहाडगज क मल्तानीढाड की गली न पाच म एक कमर म उसका सारा परिवार कहन का रहता था । बस उनका उठना बठना साना जागना ता गली म ही चलताथा। वहा सारा दिन शार शराबा चिल्लपा मची रहती थी। सरकारी स्कल स घर लाटकर सभी बच्च गली म बठकर तखती साफ करत उस पर मल्तानी मिटट्ी मलत थ। तरव्ती सखन का रखकर सारा हमउम टाला पिद्दली सडक लाघ
कर बिडलामदिर की आर दाड पडताथा। वहा क बाग बगीचा म फला क इर्द गिर्द मडराती तितलिया पकडना झल झलना आर घम फिरकर वापिस आ जाना। बचपन की इन मीठी यादा न कभी भी मयक का पीछा नही छाडा था। छाट स घर म रहत हए भी उसनअपन लिए बचपन क मधर स्वपन सजा लिए थ। अपन बाल्यकाल का खला स वचित नही रखा था।

भीषण गर्मिया म ल स तपी गर्म हवाआ क कारण पखी झलत हए सारी रात कटती थी। वा भी गली म बिछी चारपाइया पर । दीवारा पर कील गाड कर उस कील स सब अपनी अपनी चारपाई बाध दत थ जिसस रात का उनकी जगह न छिन जाए। मजाल था कि काई नई चारपाई वहा जगह पा जाती। एक बार नक्कड की बागडी बन्ता न पिछल माड पर अपन बट व नई बह का भीतर सलान की खातिर बाहर चारपाई बिछा ली अपन लिए ता पछा न क्या गालिया भरी रात चली थी। मयक धीरन वीरू कक्क आर पाली की टाली न ता बहत आनन्द लटा था। आज भी उस रात का याद कर वा स्वय ही एकात म भी मस्करा उठता था।

गलिया की सरकारी बत्तिया ता तमाम रात जलती थी । एक एक आहात म पाच छः कमर नीच व दसरी मजिल पर भी उतन ही परिवार बस थ। ऊपर वाल अपनी छत पर जमीन पर बिस्तर लगा कर सात थ। अमावस की अधरी राता म आधी रात का कान कहा साता था काई नही जान पाता था। जब कभी आधी रात का प्यास लगन पर भीतर जाना हाता था ता पखा की घर्र घर्र म चारपाइया क हिलन खर्राटा की आवाज साथ ही चडिया की खनक मिली हाती थी। मयक का जवान मन इन आवाजा म रस पान लगता था। कछ दख सकन की ललक म वा वही खड रहकर मटक स चार पाच ग्लिास पानी पीता रहता इस बीच वा पाली क भाई भाभी का हिलत जलत भी दखता था। एक बार ता पानी पीन क बाद वा वही दीवार की आट म अधर म लट ही गया था। चारी चारी उनकी परी रासलीला दख कर उनक सान क उपरात चपक स गली म जाकर अपन बिस्तर पर दवककर बाकि की सारी रात वा ख्याला म खाया वारहा था। तभी उस लगा था उसका बदन भी तप रहा था। वा भी अब जवान हा गया था। फिर न जान कब भार क तार क आझल हान क पश्चात् धप चढ तक वा गली क शार म भी साया रहा था।

बिडला मदिर क रास्त म रल्व क्वाटर्स आत थ वहा स भी बहत बच्च मदिर म खलनआत थ। उन्ही म थी भर बाल कधा तक बिखराए प्यारी सी झनक। एक बार सडक पार करत हए एक तज आती कार स उस बचाकर खीच ही लिया था मयक न। तभी स वा उसक शरीर का र्स्पश भला नही था। नाम पता भी पछा था व व सभी उस घर तक छाड कर आए थ माना उन्हान काई र्माचा जीत लिया था। उसक पिताजी रल्व क मन आफिस बडादा हाऊस म र्क्लक थ। अब झनक भी कली स फल बन चली थी। र्स्कट की जगह सलवार कमीज न ल ली थी। झनक की एक झलक पान क लिए मयक क पाव हर रात उसी रास्त का नापत थ। कई बार उनका आमना सामना हा जाता था। दाना ही एक दसर का दखत ही झप जात थ। उधर झनक का भी मयक का पतिक्षण इतजार रहन लगा मयक की र्अथभरी आखा का पभाव झनक क गलाबी पडत चहर पर स्पष्ट दृष्टिगाचर हान लगा था। एक रात दाना न लज्जा का बाध ताडकर पम का इजहार कर ही डाला फिर ता पम की पीग चढती चली गई थी।

झनक का र्पणरूपण अपनान की इच्छा मयक का कछ बनन की आर परित कर रही थी। बी काम की परीक्षा पथम डिवीजन म उर्त्तीण करक उसन उत्साह पर्वक नाकरी क आवदनपत्र भजन आरम्भ कर दिए थ। उन्ही दिना धीरन क मासाजी न उस अमरिका बलाया ता मयक क मन म भी अमरिका जान की लालसा जागृत हई। धीरन का एम्बसी का काम वीजा टिकट वगरह करवान म मयक हर पल उसक साथ था। न जान कस ख्याल आया कि मयक न भी टरिस्ट वीजा क लिए फार्म भर दिया आर उसक आश्र्चय का ठिकाना नही रहा जब उस किस्मत क धनी का भी छः महीन का वीजा मिल गयाथा।

दास्ता की टाली न ता जश्न मनाया कि मयक की लाटरी लग गई पर घर म सब का साप सघ गया कि टिकट क पस कहा स आएग। अब ता चार पस कमाकर परिवार क खर्च म हाथ बटान का समय आया था आर य जनाब विलायत भाग चल थ। पाकिस्तान स घरबार लटाकर मयक क दादाजी का रिफ्यजी हान पर यह एक कमरा सिर ढाकन का मिला था। दा बटा का लकर व दिल्ली पहच थ। चाचाजी ता नाकरी लगन पर नहरूनगर जाकर रहन लग थ मयक क पिताजी अपन परिवार क साथ यही रह गय थ। पहाडगज म फला की दकान थी उनकी। बच्च पढाई म अच्छ थ यही बात उनकी सतष्टि का कारण थी। किन्त बीमार मा जीवन स अस्तष्ट थी। उस बटिया क व्याह की चिन्ता खाए जाती थी दिन रात। मा क बीमार हान पर परनी चाची आटा गथ दती थी आर अनीता तदर स राटिया लगवा लाती थी। साथ ही काली दाल भी वही स खरीद लाती थी। क्या स्वाद आता था कि आज भी उस याद करक मयक क मह मलार टपक पडती थी। कभी कभार शादी व्याह म फला क टाकर भजन स अच्छी कमाई हान पर पिताजी तदर स मीट या मर्गा ल आत थ फिर ता सार आहात म शान स खाना हाता था। एस म मयक का पस दन की ता कही लश मात्र सभावना भी नही थी परिवार म।

वीरू एक म्यजिक गप म डम बजाता था। गप क सचालक मि कपर स वीरू की अच्छी दास्ती थी। मयक भी कभी कभी वीरू क साथ वहा जाता था मि कपर न वीरू की जिम्मवारी पर मयक क लिए टिकट क पस सद पर द दिएथ जा कि मयक न सबस पहल अदा किए थ वीरू की इज्जत का मान रखन क लिए।

वीजा मिलन पर मयक न झनक का बताया ता वा मयक क बिछडन क ख्याल मात्र स तडप उठी थी। साध्य क झटपट स रात की गहराती कालिमा म भी व एक दसर स लिपट आस बहात रह थ। झनक स किया वायदा उसन निभाया था वापिस जाकर। झनक क माता पिता स उसन इतना वायदा लिया था कि व उसका इतजार करग व उन्हान भी मयक का मान रखा था।

सनहर भविष्य क ढरा ख्वाब सजाए जब वा अमरिका क लिए उड चला था ता य पतीत हाता था जस वा काई वी आई पी बन गया था। धीरन न्यर्याक क ज एफ क हवाई अडड् पर उसकी राह दख रहा था। फिल्मा म दखा हआ न्यर्याक वास्तविकता म बहत सदर दिख रहा था। यहा की गगनचम्बी इमारत व अट्टलिकाए दखकर वा विस्मय व हर्ष स भर उठा था। क्वीन्स क एक छाट स रस्तरा म पच्चीस डालर का खाना व बीस डालर टक्सी का बिल धीरन द्वारा दन पर मयक मन ही मन डालरा का रूपया म गिनकर धीरन क पति कृतज्ञता स भर उठा था।

वहा स पदल ही वा उस अपन भीड भर कमर म लाया ता मयक का लगा उसक स्वप्न टटकर बिखर गए थ। वहा पाच भारतीय लडक आर भी रहत थ। वही जमीन पर सब साए हए थ। मयक का भी नया सटकस एक कान म रखकर धीरन उस चपक स बाहर ल आया व बताया कि अनाथ हान क कारण उस की मासी न उस अमरिका बला ता लिया था किन्त फिर पल्ला छडा लिया था। व भी कठिनाई स अपना खर्चा परा करत थ। धीरन कवल पति शनिवार रात उनक पास घर का खाना खान जाता था। उसन बताया कि कमर म साए य भारतीय लडक पाफशनल्स ह। फिलहाल जा काम मिलता ह वही करक गजारा कर रह ह। कल की कल दखी जाएगी। बस यही यहा की वास्तविकता ह।

इतनी कडवी सच्चाई मयक क गल नही उतर रही थी। उसक विचारा म ता अमरिका म रहन वाला क ढाठ ही निराल हात ह व भारत आन पर तभी ता ढरा गहन कपड आदि खरीदत ह। उनक पास बडी बडी कार व काठिया हाती ह। लकिन मालम हआ कि बहद लगन महनत व मकद्दर स ही इस मकाम तक पहचा जा सकता ह। तभी अमरिका आपक स्वप्न भी पर करता ह। अगल दिन धीरन बस स उस अपन काम पर साथ ल गया। मनजर न बताया कि टरिस्ट का काम करना गरकाननी ह अमरिका म। उस कही काम नही मिल रहा था। करीब दस दिना बाद एक गजराती रस्तरा क राकी पटल न उस आधी पगार पर काम द दिया। सबह का नाश्ता व सध्या समय चाय या काफी भी मिलती थी वही स। कछ ही दिना म अपनी लगन व महनत स मयक न राकी का दिल जीत लिया था। वा अन्तर्राष्टीय डाइविग लायसस बनवा लाया था। वा पटल की गाडी लजाकर रस्तरा की गासरी ़खाद्य सामगी√ भी खरीद लाता था। मयक परी तन्ख्वाह बचा लता था। ऊपर स जा टिप मिलती थी उसस वा भारत फान कर क उन स झठ मठ बताता था कि वा बड मज स ह।

पटल का मयक न प्यार सवा व कार्य कशलता की डार स बाध लिया था। छः महीन बीतन पर उसन भारत वापिस जाना था पटल न उस दावारा अपन पास बलान क लिए काम का पत्र द दिया था। उसी पत्र क आधार पर वा पनः अमरिका आ गया था। भारत वापिस जाकर उसन वीरूका कर्ज उतारा झनक स शादी की व पिताजी का भी पस दिए थ। उसक आन क एक वर्ष बाद झनक भी गनगन का लकर उसक पास आ गई थी। अपन स्वप्न साकार दखकर मयक का स्वय स ईर्ष्या हा रही थी। उस एक वर्ष म धीरन क साथ मिलकर दाना दास्ता न बकरी खाल ली थी। धीरन बकरी सभालता था। झनक क आन क पर्व ही मयक न एक कमर का घर भी ल लिया था। दाना क बचपन की दास्ती दख सख साझाकरत करत पक्की हा चकी थी। धीरन का भी अपना कहान का मयक का परिवार साथ था। रात का दाना इकट्ठ खाना खात थ व झनक क हाथ का खाना खाकर दाना उगलिया चाटत रह जात थ। गनगन की हसी व बाल सलभ अठखलिया न मयक का जीवन इन्दधनषी रगा स भर दिया उसन भी एक सकण्ड हड हीरा सिविक कार ल ली । धीरन भी गनगन स थाडी दर खलन क बाद उस सलाकर ही जाता था। मयक की जीवन की गाडी अब दाड चली थी रफ्तार लन का।

भारत म मयक क पिताजी अब सिर उठा कर गर्व स चलत थ। भाई अमरिका म हान स अनिता का रिश्ता भी बढिया मिल गया था। मयक क पस आन स मा की बिमारी भी ठीक हा गई थी। अपनी हसियत स बढकर अनिता की शादी की थी मयक न। गनगन का बबी सीटर क पास छाडकर झनक न भी काम करना पारम्भ कर दिया था। जब उस स्कल भजन का समय आया ता ज्ञात हआ झनक पनः मा बन रही थी।

अबकी बार वा अमरिका म मयक क पास थी। मयक उसक खान पीन का परा ध्यान रखता था। पटल की बीवी मीरा बन उस यहा की बात समझाती थी। इन वर्षा म झनक न अमरिका की भाषा रहन सहन सब अच्छ स सीख लिया था। हसत खलत समय अबाध गति स बीत रहा था। नवपाण क आगमन की पतीक्षा थी अब ता। मयक मस्ती स सीटी म धन बजात हए जब भी कार की स्पीड बढाता ता झनक उस टाक दती थी।

झनक हाथ धा कर धीरन क पीछ पडी थी कि अब वा भी शादी कर ल। धीरन मयक स आय म चार वर्ष छाटा था पर डील डाल म एकदम उस जसा था। वा सदा ही काम म व मयक क परिवार म व्यस्त रहता था। अपन लिए लडकी ढढन का उसक पास समय ही कहा था। मासी भी बस शनिवार का आपचारिकता निभा दती थी। धीरन बात का हसी म टाल दता था।

झनक की डिलीवरी का समय करीब आ गयाथा। तभी पटल न इस रस्तरा का मनजर मयक का बना दिया व स्वय दसरा रस्तरा खाल लिया। मयक का पतीत हआ माना आन वाला नन्हा जीव उसक जीवन म खशिया की बहार ला रहा ह। बरखा की रिमझिम फहार पर जस मयर झम कर नाच उठता ह वस ही उसका सर्म्पण अस्तित्व झम उठा । मयक न झनक स कहा \बटा पदा हआ ता उसका नाम ़मयर√आर यदि पनः बटी आई ता उसका नाम ़रिमझिम√ रखगा़झनक उसकी रस भरी बाता पर मस्करा भर दी थी। उसकी मीठी कल्पना म खा गई थी भविष्य की सखद तस्वीर लिए। मयक का पान क बाद वा ता अपना मायका भी भल गई थी। उसका आदि मयक था ता अत भी मयक ही था अब।

समय पर झनक की नार्मल डिलीवरी हई। आस म भीगी मलायम काया लिए रिमझिम उनक जीवन म पधारी। गाल मटाल अति सदर बच्ची थी। इतनी सदर बटिया पाकर मयक क पाव धरती पर नही पड रह थ पसन्नता क मार। अगल ही दिन सध्या क चार बज झनक व रिमझिम का घर ल जाना था। मयक न अगल दिन साथ वाली सीट पर बल्ट लगाकर गनगन का बठाया व दाडा ली कार। उसकी साच पनः अतीत म गात लगान लगी थी आर उसका पाव एक्सीलटर पर दबाव बढाता जा रहा था।

यही स ता हमन कहानी पारम्भ की थी।

स्वय पर गर्वित हात हए उस हाश ही कहा था। अपन आप म गम उसन दखा नही कि सामन का टक लाल बत्ती क कारण रूक रहा ह। उसन बिन साच तज कार टक म जा मारी। पल म क्या स क्या हा गया। चारा आर स नीली राशनी बिखरती सायरन बजाती पलिस की गाडिया दाडी मयक की आर। उसकी सफद कार स लाल रक्त की धार बह रही थी। कार सामन स पिचक गई थी मयक का पार्थिव शरीर स्टीयरिग व्हील क पीछ फसा हआ था। अलबत्ता गनगन दाई आर बहाश पडी थी उसकी सास चल रही थी। मयक अकला ही जा चका था बहत दऽऽऽ र

धीरन का फान पहचा वा अविश्वास स भरा जब वहा पहचा ता उसका यार जा चका था उस छाडकर। उधर झनक हर पल मयक की राह बडी बसबी स तक रही थी घर जान क लिए। वा बार बार रिसप्शन स घर का फान मिलाती वहा काई था ही नही ता फान कान उठाता। जब साध्य का धधलका भी रात्रि की बाहा म समान लगा ता उसकी व्यगता बढ गई। बर विचारा न उस पर हावी हाना चाहा ता पलका क पहरी आसआ की बाढ का

राक नही पाए आर वग स बह निकल। आज उस दवी दवताआ की मन्नत मन्नाती करनी भी आ गई थी। वा ता पर्णरूपण मयक पर निर्भर थी। वही उनका अवलम्ब था।

एक्सीडट स सबधित सार कार्य निपटान म रात्रि घिर चली थी। पटल का वही छाडकर कवल धीरन ही झनक का लिवान अस्पताल पहचा। झनक हरान हा धीरन स मयक क न आन का कारण व कशलक्षम पछ रही थी साथ ही आस बहा रही थी। धीरन न धर्यपर्वक उस चलन का कहा व बाला उस काम था उसन मझ कहा था तम्ह लिवान का। काम म दर हा गई सारीॠ

धीरन ख्याला म खाया चपचाप कार चला रहा था। उधर झनक उसका पीला पडा चहरा पढन का विफल पयत्न कर रही थी। वा बाली कछ नही बस सिसकती रही धीम धीम। घर म कदम रखत ही उस अपनी जान पहचान क सभी चहर दिखाई दिए। उस य पतीत हआ माना उसका व रिमझिम का स्वागत करन का मयक न सरपराईज दिया ह उसका। उसकी जान म जान आई। उसन बरबस अपन हाठा पर मस्कराहट बिखरन का यत्न किया पर उस की दृष्टि चारा आर मयक व गनगन का खाजन लगी। तभी एम्बलस का सायरन बजा सभी उठकर बाहर भाग मीराबन न उसक हाथा स रिमझिम का उठा लिया। धीरन की मासी मिसस सन मिसस गप्ताआदि उठकर उसक करीब आ गई।

सर्वपथम धीरन गनगन का उठाए भीतर आया झनक न पम विह्वल हा गनगन का चमना आरम्भ कर दिया। तभी पटल आदि सबलाग स्टचर पर श्वत चादर स ढकी एक लाश लाकर भीतर जमीन पर रखन लग। झनक एक क्षण का भयभीत हा गई। चहर पर स चादर हटत ही वहा मयक का रक्तरजित चहरा दखकर झनक एक चीख मारकर ॠही ऽऽऽऽका स्वर उच्चारती मयक क पार्थिव शरीर पर गिर कर मर्छित हा गई। गनगन भी मामा पापा बालकर बिलख रही थी व मा क शरीर स लिपटी जा रही थी। एसा हृदय विदारक दृश्य दखकर कान नही पसीजता। हानी का एसा नगा नाच दखकर सभी फट फटकर रा रह थ। सब पत्यक्ष था किन्त किसी का विश्वास नही हा पा रहा था।

दाना क परिवारा का भारत म खबर दी गई। व सब भी बरी तरह स रा रह थ। एक ही रट थी कि झनक का दाना बटिया क साथ भारत भज दा। धीरन न वास्तविकता का समझत हए स्वय ही वर्त्तमान स जझन का सकल्प लिया। पटल न हिन्द सासाइटी वाला का सचित कर दिया था। अगल दिन शनिवार था श्मशान म जब लकडी क कफन बाक्स म मयक का सजाकर नया काला सट टाई पहनाकर फला स सजाकर वहा रखा गया ता पतीत हाता था वा अभी उठकर चल दगा। झनक पर ता कहर टटा था वा पाषाण पतिमा बनी सनी आख लिए शन्य म तक रही थी। वहा गायत्री मत्र या शिवस्त्रात पढ जा रह थ उस कछ ज्ञात नही था। जब मयक का बिजली क अग्निकड म अर्पित किया जा रहा था ता उन तीन निरीह जाना का दखकर अजनबी भी आस बहा रह थ। लकिन झनक थी इक मक दृष्ता।

उजडी बहार दामन म समट कर वा एक चलती फिरती लाश बन चकी थी। ॅसमय॔ अब समय ही उसक घाव भरगा सब जानत थ। मीराबन धीरन की मासी आदि न चालीस दिन तक झनक का परा ध्यान रखा। अभी वा काम करन याग्य नही थी। उधर धीरन स्वय का उन स बधा पाता था। उनका परा ध्यान रखना वा अपना नतिक उत्तरदायित्व समझता था। उनक सख का वा साथी था ता दख भी ता उसी न साझा करना था न। आखीर मयक उसक बचपन का साथी उसका एकमात्र दास्त था यहा पर।

एक दा माह बीतन पर हिम्मत जटाकर एक दिन धीरन न झनक स भारत वापिस जान क विषय म पछा। गहन गभीर सी झनक न उत्तर दिया कि वा दाना बटिया क साथ यही अमरिका म ही रहगी। भारत म ता काई भी एसा शभचितक नही ह जा पलक बिछाए उनकी बाट जाह रहा हा। ससराल वाला का कवल मयक का पसा चाहिए व मायक म काई उन तीना का खर्चा नही उठा सकता। अब वा स्वय ही काई नाकरी करगी। यह सनकर धीरन अवाक् रह गया।

झनक की अभी उम ही क्या थी। उसका दृढनिश्चय व बटिया क पति कर्त्तव्य पालन की क्षमता व निष्ठा दखकर उस झनक पर गर्व हआ। वा मयक क बिछाह म टटकर बिखरी नही थी वरन् दृढ सकल्प हा गई थी। लाई परूष सा फसला लिया था उसन। धीरन भी उसका साथ दन का उत्साह स भर उठा। वा पतिदिन काम क पश्चात् पहल की तरह ही उनक पास आता। घन जगल सा सन्नाटा व उदासी उसक आन स छट जाती। वा रिमझिम स खलता उस हसाता गनगन का हामवर्क कराता फिर चाकलट आर आईसकीम खिलान ल जाता साथ ही घर का जरूरी सामान भी लाकर रख दता था। हा झनक स्वचलित मशीन सी खाना बनाती व रख दती थी। न वा हसती न बालती न ही नजर उठाकर दखती धीरन का भी मयक की कमी खब खटकती थी।

एक बार धीरन आया ता दखता ह झनक बच्चा क साथ लटी दर्द स कराह रही ह। उस बहत तज बखार था ; धीरन न आगहपर्वक उस दवा आर चाय बनाकर दी। बच्चा का भी कछ खिलाया पिलाया। उस रात फिर वा वही रह गया व साफ पर ही सा गया। पात : आख खलन पर दखता ह कि उस पर कम्बल डला हआ था। उस कछ स:खद सा लगा। दस माह की रिमझिम आजकल दाता क निकलन क कारण बीमार चल रही थी। झनक क चहर पर भी बचनी भरी थकान चल रही थी। तज बखार क कारण उसक माथ पर झनक बर्फ क पानी की पट्टिया रख रही थी। धीरन न उस थाडा आराम करन का सान भज दिया। पा फट जब झनक की आख खली , ता क्या दखती ह „ धीरन अति तन्मयता स रिमझिम की पट्टिया तमाम रात स कर रहा था। व अब उसका बखार उतरन पर मस्करा कर दख रहा था।

जिस लगन आर पम स वा दाना बच्चिया का उनक पिता की कमी नही महससन दता था, उसस झनक बखबर नही थी। उसक रान व गम का कम करन क लिए भी ता एक ही कधा थार्ा धीरन का „ फिर भी एक दिन उसन धीरन स कह ही दिया कि अब वा दर न कर अपनी जीवर्न सगिनी ल ही आए। झनक का भी साथ मिल जाएगा।

इतना सनत ही धीरन न आव दखा न ताव, दाना बच्चिया का दाना बाहा म उठाकर , दाना आर स सीन स लिपटाकर झनक स तपाक स बाला, ॠअब य दाना ही मरी जिदगी ह। नही रह सकता म इनक बिना „ आर तर्म ॅ ॅ तम हम तीना की जिदगी हा। ॅझनक अवाक् मह उठाए धीरन की आखा म दृढ विश्वास स परिपर्ण कर्त्तव्यनिष्ठा दख रही थी। उस धीरन म एक महान व्यक्ति का स्वरूप दिखाई द रहा था। त्याग की मर्ति या उस क लिए काई यगावतार ॅ ॅ „

काई दवशक्ति उस धीरन की आर ढकल रही थी। वा चपचाप उसकी दाना बाहा क मध्य रिक्त स्थान म सिमट गई। उसकी दाना बाजआ न धीरन क इर्द गिर्द जाकर पीछ स उगलिया फसा कर स्वय का उसस बाध लिया था सदा क लिए ॅ ॅ वही ठहर जान क लिए ॅ ॅ ॅ „ „